बाबाजी की अमर कथा

गणपति श्री गणेशजी करो हृदय प्रवेश तुम सागर गुण गान के देवों शुभ उपदेश बार–बार वंदन करू बाबा बालकनाथ कथा लिखु मैं आपकी कथा राखो सिर पर हाथ। सुन्हरी जटा गल मे सिंगी, व रूद्राक्षी माला पैरों में पदम की चमक, हाथ में झोली चिम्टा। वैरागन मृग छाला का सुन्दर सिंघासन व मस्तक का तेज ऐसे अनुभव कराता है कि जैसे प्रभु स्वयं बालक रूप में अवतार लेकर संसार का उद्यार करने को मातृ लोक में आ गये हैं । कलयुग में भक्तो का सर्व कार्य सिद्ध करने वाले दूधाधारी सिद्ध श्री बाबा बालकनाथ जी को मै कोटी–कोटी प्रणाम करता हूँ ।

श्री बाबा बालकनाथ जी का पूर्व जन्म

प्रथम अध्याय

''जय बाबे दी''

पूज्य स्वामी श्री बाबा बालक नाथ जी माहाराज कैलाशपति भगवान शंकर महादेवजी के जन्म से पूजारी थे। द्वापर युग के समय बाबा जी का नाम बाल ब्रहमचारी था। बाबाजी भगवान शंकर जी के परम भक्त थे । अपने मनुष्य जन्म को सफल करने के लिये प्रभू की भक्ति में लीन रहते थे ।द्वापर युग के समाप्त होने से पहले श्री बाबाजी बाल ब्रहमचारी के रूप में एक रोज भगवान शंकर जी के दर्शन की आशा धार कैलाश यात्र को चल पडे कई महीनों की कठोर यात्रा और हाजारो कष्ट सहन करते हुये मानसरोवर झील पर पहुँचे इस झील की लम्बाई चौडाई बहुत बडी है झील का पानी सफेद दूध की तरह और बर्फ सा ठण्डा है । इसके चारों तरफ बर्फ–ही–बर्फ नजर आती है। यहां से बाल ब्रहमचारी जी को कैलाश पर जाने का कोई रास्ता नजर नहीं आया । कैलाश पर्वत बर्फ से ढका हुआ है बाबाजी कैलाश पर्वत पर जाने के लिये मन मे विचार करते है, कि शंकर जी के दर्शन कैसे होंगे । बाबाजी को झील पर कोई मनुष्य भी नजर नहीं आता जिससे कैलाश पर्वत पर जाने का मार्ग पूछलें । बाबाजी को इन विचारों में कई दिन झील पर ही व्यतीत करने पड़े। आखिर एक रोज भगवान शंकर की कृपा से धरमो नाम की एक बूढी माई के दर्शन हुये। माई धरमो ने निराश हुये इस साधू से पूछा की बाबा तुम यहां क्या करने आये हो, ब्रहमचारी ने कहा माता मैं भगवान शंकरजी के दर्शन के लिये कई महिनों से हजारों कष्टों का सामना करता हुआ यहां आया हूं । परन्तु मुझे अब कैलाश पर्वत पर जाने का कोई रास्ता नजर नहीं आता भगवान शंकर जी के दर्शन कैसे होंगे मैं अब निराश होकर इस झील पर ही भटकता फिर रहा हूं । ब्रहमचारी से दर्द भरी दास्ता सुनकर धरमो माई ने कहा, हे योगी अब रात का समय होने वाला है । अब तुम मेरे घर चलकर रात व्यतित करों, सुबह मैं तुझे कैलाश पर्वत पर जाने की विधी बताऊगी । यह सुनकर बाबाजी धरमो माई के घर चले गये । धरमो माई के पास जो फल आहार था वो बाबाजी को खाने को दे दिया । फिर रात को बाबाजी ने धरमो माई से कैलाश पर्वत पर जाने की विधि पूछी, माँ धरमो ने कहा बाबा मैने सुना है की कभी–कभी सुबह जग जननी माँ तीनों लोकों की पालन हार रक्षक माँ पार्वती जी इस झील में स्नान करने आती हैं, अगर तुम्हारी उनसे भेंट हो जाये तो वही तुम्हें भगवान शंकर जी के दर्शन करवा सकती हैं। यह सुनकर ब्रहमचारी के मन को बहुत धीरज आया ।

सुबह होते ही बाबाजी झील पर समाधी लगाकर शंकर भगवान की भक्ति में लीन हो गये । शरीर सूखकर कमजोर हो गया, चारों ओर शरीर पर मिट्टी जम गयी। मिट्टी के उपर घास उग आयी, और शरीर बर्फ की चादर से ढक गया। अन्न–जल त्याग कर सिर्फ पवन का आहार करते हुये प्रभू की भक्ति में लीन हो गये। तीनों लोकों के नाथ गौरापति सदाशिव त्रिनेत्र धारी भगवान भोले नाथ का सिंघासन डोल गया, और शंकरजी के ध्यान में आया की झील पर एक भगत मेरे दर्शन के लिये बडा व्याकुल हो रहा है। भगवान शंकर ने माँ पार्वती से कहा कि हे पार्वती सोमावती अमावस्या द्वापर युग में अंतिम बार आ रही है। इसके बाद फिर कलयुग में ही आयेगी ।

सोमावती अमावस्या को स्नान वेद शास्त्रें मे बडा पवित्र और फलदायक लिखा है इस लिये आप गंगा झील मानसरोवर में स्नान करके आओ। प्रभू की आज्ञा पाकर माँ पार्वती पवन रूप हो झील पर आ गयीं। तो वहां पर उन्होने एक शिव भगत को ओम नमः शिवाय की धूनी लगाये हुये समाधी धारण किये देखा। माँ पार्वती ने अपने ध्यान से देखा और चुप चाप जाकर झील में स्नान करने लगीं और जब वापस जाने लगीं तो योग बाल ब्रहमचारी ने अपनी शक्ति द्वारा जगत जननी माँ पार्वती को पहचान लिया और माँ के चरणों में शीष झुका कर प्रणाम किया, माँ पार्वती ने आर्शीवाद देते हुये पूछा की हे योगी तुम्हारा झील पर समाधी धारण करने का क्या मनोरथ है। ''कहो क्या चाहिये'' शिव भगत ब्रहमचारी ने कहा माँ पार्वती सोमवती अमावस्या को मुझे आपके पवित्र चरणों के दर्शन हुये हैं। मै आपके आगे विनम्र प्रार्थना करता हूं कि अब आप परम् पूज्य पिता भगवान शंकर के दर्शन करवाने की कृपा करें। बस मेरे मन की यही इच्छा है, तब माँ पार्वती ने कहॉ कि हे पुत्र भगवान शंकर से पूछे बिना मैं तुम्हे साथ कैसे ले जा सकती हूँ। ब्रहमचारी ने कहा माँ अगर आप मुझे भगवान शंकर के पास नहीं ले जायेगी तो मै आपके चरणों में प्राण त्याग दूंगा। ब्रहमचारी का दृढ विश्वास देखकर माँ पार्वती जी ने योगी को भगवान शंकर के पास ले जाना स्वीकार कर लिया। परन्तु पार्वती ने अपनी शक्ति द्वारा बाल ब्रहमचारी को बारह वर्ष का बालक बनाकर यह वरदान दिया कि तुम्हारी उम्र चाहे कितनी भी हो जाये, तुम सदा बारह वर्ष के ही नजर आओगे। इस वरदान से ही बाबाजी को बालक का रूप प्राप्त हुआ ।

बालक से कहा बेटा ऑखें बन्द करके मेरे त्रिशूल को पकड लो। जब मैं कहूँगी तब ही तुम अपनी ऑखें खोलना, यह सुनकर ब्रहमचारी जी अति प्रसन्न हुये और ऑखें बन्द करके माँ के त्रिशूल को पकड लिया और माँ पवन रूप होकर कैलाश पर्वत पहुँच गयीं। कैलाश पर्वत पर पहुँचकर पार्वती जी ने कहॉ बेटा अब ऑखें खोल लो, और तुम यहॉ रूको मै प्रभु शंकर जी के पास तुम्हें ले जाने की प्रभु से प्रार्थना करती हूँ। माँ पार्वती शंकर जी चरणो में पहुचकर सेवा में लीन हो गयीं। जगत भगवान शंकर जी ने कहॉ पार्वती आज कोई खास बात मालूम होती है, जो तुम इतनी सेवा कर रही हो, जगत जननी माँ पार्वती ने कहा, महाराज तीनों लोकों के पालन हार, हे त्रिशूल धारी, हे कैलाश पति, हे भोले शंकर मै आपके चरणों में एक विनती करना चाहती हूँ, आप की आज्ञा हो तो अपनी विनय सुनाउं। प्रभुभोले शंकर भगवान भोले नाथ जी मुस्कराकर बोले हे पार्वती आज तुम क्या संदेश लायी हो, माँ ने कहां आज एक बालक झील से मेरे साथ आया है जो आपके दर्शन करना चाहता है। प्रभु शंकर ने कहा उस बालक को मेरे पास यहीं ले आओ। तब माँ पार्वती बालक को शंकर जी के पास ले गयी। बाल ब्रहमचारी भगवान शंकर को अपने पास देख कर श्रद्धा प्रेम भावना से प्रभु के पवित्र चरणों में शीष झुका कर लेट गये। नमस्कार तथा चरण वंदना करते हुये प्रभु की भक्ति में लीन हो गये। चरणों से लिपटे हुये बाल ब्रहमचारी से प्रभु शंकर ने कहा उठो बेटा तब ब्रहमचारी ने कहा महाराज हे दीनों के नाथ, हे जटा धारी, हे कैलाशपति, हे नीलकंठ, हे त्रिनेत्र धारी, हे भोलेनाथ जिस तरह आपने मुझ पर कृपा की उसी तरह आप धरमो माई को झील मानसरोवर पर दर्शन देकर प्रसन्न करें। मेरी आपसे यही विनती है। तब उसी समय भगवान शंकर, माँ पार्वती और बाल ब्रहमचारी को लेकर झील पर पहुंचे और धरमो माई को दर्शन देकर प्रसन्न किया। फिर बालक ने प्रभु जी के चरणों में प्रार्थना की कि हे प्रभु भोले नाथ कैलाशपति त्रिनेत्र धारी भगवान शंकर मेरे लिये क्या आदेश है, तब भगवान शंकर बोले, हे बालक तुम भक्ति द्वारा वरदान प्राप्त करके अमर होकर कलयुग में प्रसिद्ध होगे।

जो प्रेमी भगत निश्चय करके आपकी शरण में आयेंगे उनके सब कार्य सिद्ध होंगे। यह धरमो माई भी कलयुग में रतनो माई के नाम से प्रसिद्ध होगी, तुम दोनो ही साधू–सन्त गउ गरीब की सेवा करोगे। तुमने कैलाश पर्वत पर जाने से पहले बारह घडियां धरमो माई के यहां व्यतीत की थीं। इसके बदले तुम बारह वर्ष रत्नों माई की गउओं को चराओगे। यह तुम्हे अपना पुत्र ही समझेगी। तेरे चमत्कारों का इसे पता नहीं चलेगा। परन्तु बारह वर्षो के बाद इसका भेद खुल जायेगा। यह कहते ही भगवान शंकर पवन रूप होकर माँ पार्वती के साथ कैलाश पर्वत पर चले गये। इस पश्चात ब्रहमचारी झील के पास ही भगवान शंकर जी भक्ति में लीन हो गये।